

जूही कै जनम दिन



स्कूल मा जूही कै जनम दिन मनाव गवा ,जूही स्कूल से घर लौटी

जूही –नमस्ते अम्मा ,हम आय गएन

अम्मा –जियत रहव बच्चा ,का भवा आज तुम्हरे स्कूले मा ?

जूही –आज तौ मजा आय गवा अम्मा ..

अम्मा –अच्छा ! कैसे ?

जूही –आज स्कूल मा हमार औ वैभव कै जनमदिन मनाव गवा

अम्मा –अरे वाह ,कैसे मनाव गवा ,बताऊ तनिक .

जूही –जैसेन हम कक्षा मा पहुंचेन ,दीदी तुरंतय बधाई दिहिन

अम्मा –यू तौ बड़ा नीक भवा

जूही –हाँ अम्मा ,फिर दीदी हमका मिठाई खवाईन ,टाफी दिहिन ,सब बच्चा ताली

बजाईन ,गाना गाइन औ नाचे

अम्मा –तब तौ तुम पंचेन का बड़ा मजा आवा होई ,तुम्हरे बप्पा अब्बय तुम्हरे खत्तिर मिठाई लैके आवत हुइहँ.



शब्दार्थ

मा-मॅ मनावा-मनाया गवा-गया गयेन-गये आय-आया भवा -हुआ बताऊ -बताओ
जैसेन -जैसा तुरंतै -तुरंत नीक -अच्छा

खवायिन-खिलाया बजायिन -बजाया

अच्छा बताऊ तुम पंचेन कै जनम दिन कब मनावा जात है

संरक्षण: श्री संजय सिन्हा, निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ०प्र०, लखनऊ।

अवधारणा एवं निर्देशन: डॉ. अजय कुमार सिंह, संयुक्त शिक्षा निदेशक (एस०एस०ए०), राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ०प्र० लखनऊ।

समन्वय व समीक्षा:

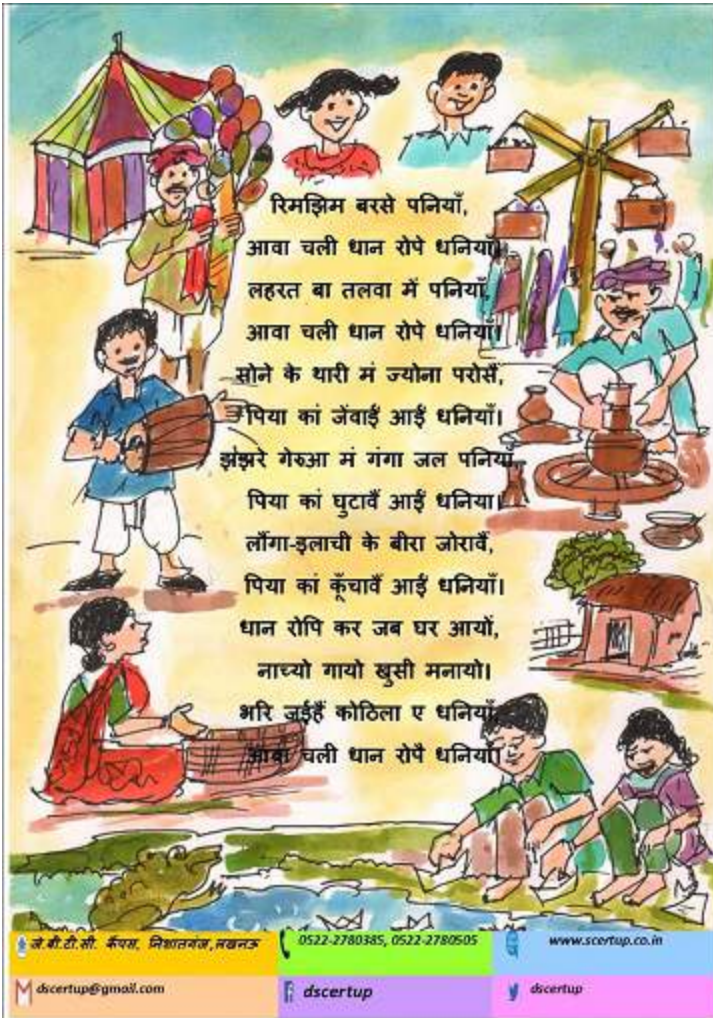
- श्रीमती दीपा तिवारी, सहायक शिक्षा निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ०प्र० लखनऊ।
- डॉ० प्रदीप जायसवाल, प्रवक्ता (शोध), राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ०प्र० लखनऊ।
- डॉ० वन्दना मिश्रा, प्रोग्राम स्टेट प्रोग्राम मैनेजर, केयर इण्डिया, उ०प्र० लखनऊ।
- श्री मृणाल मिश्रा, सलाहकार केयर इण्डिया, उ०प्र० लखनऊ।

ई-बुक डिजाईन: श्री आशुतोष आनन्द पूर्व माध्यमिक विद्यालय मियागंज बाराबंकी।

लेखन:

- श्री राम बहादुर मिश्र पूर्व माध्यमिक विद्यालय नरौली, बाराबंकी।
- श्री आशुतोष आनन्द पूर्व माध्यमिक विद्यालय मियागंज बाराबंकी
- **आडियो-** श्रीमती अंजना अवस्थी, ग्राम- रायपुर बाराबंकी।
- **कवर पेज:-** श्री गणेश चन्द्र डे - स्वतंत्र चित्रकार उ०प्र० लखनऊ।

चित्रांकन एवं डिजाईन: सुश्री प्रतीक्षा चौहान, सलाहकार राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ०प्र० लखनऊ।



रिमझिम बरसे पनियाँ,
 आवा चली धान रोपे धनियाँ।
 लहरत बा तलवा में पनियाँ,
 आवा चली धान रोपे धनियाँ।
 सोने के थारी में ज्योना परोसें,
 पीपिया कां जंबाई आई धनियाँ।
 झंझरे गेरुआ में गंगा जल पनियाँ,
 पिया कां घुटावें आई धनियाँ।
 लोंगा-इलाची के बीरा जोरावें,
 पिया कां कूचावें आई धनियाँ।
 धान रोपि कर जब घर आयों,
 नाच्यो गायो खुसी मनायो।
 भरि जईहें कोठिला ए धनियाँ,
 आवा चली धान रोपे धनियाँ।